ॐ

ब्रह्मचर्य-साधना :

लिंग-भेद एक कल्पना

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

लिंग पुरुष तथा स्त्री-जाति के मध्य वर्तमान विभेद है। यह मानसिक सृष्टि है। यह कल्पना है। यह शरीर जिन पंचतत्त्वों से संघटित है, उनमें कोई लिंग-भेद नहीं है। मानव-शरीर पंचतत्त्वों के सम्मिश्रण के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। फिर यह लिंग-भेद का भाव कैसे आया? लिंग-भेद का विचार भ्रामक है। यह मन की एक चाल है। यह माया का इन्द्रजाल है। यह एक धारणा है। यौन-विचार बद्धमूल होता है। पुरुष कभी यह नहीं सोच सकता कि वह स्त्री है। स्त्री कभी यह नहीं सोच सकती कि वह पुरुष है।

एक जीवन्मुक्त महात्मा के लिए यह जगत् एकमात्र ब्रह्म से आपूर्ण है। एक कामुक व्यक्ति के लिए यह जगत् स्त्रियों से आपूर्ण है। वह यदि एक काष्ठ-स्तम्भ को कौशेय लबादे से अथवा आकर्षक सजावट वाले अंचल-युक्त सुन्दर वस्त्र तथा साये से आवृत कर दें, तो वह उससे ही अनुरक्त हो जाता है। काम-वासना एक भीषण अभिशाप है। जब व्यक्ति काम-वासना के अधीन होता है, तो उत्तेजना तथा कामावेग उसकी समझ और बुद्धि को नष्ट कर डालते हैं, उसको अभिभूत कर लेते हैं तथा उसे सर्वथा असहाय बना डालते हैं।

जिस गृहस्थ ने संसार के कष्टों के परिणाम को सम्यक् रूप से समझ लिया है, वह सांसारिक जीवन से अपना पीछा छुड़ाने का प्रयास करता है। इसके विपरीत काम-वासना से पूर्ण एक अविवाहित व्यक्ति व्यर्थ में यह सोचता है कि वह पत्नी तथा सन्तान के अभाव के कारण अति-दुःखी है और वह अपना विवाह करने का प्रयास करता है। यह माया है। यह मन की चाल है। सावधान रहें।

एक कामी अविवाहित व्यक्ति सदा यह सोचता रहता हैह्न ''मैं कब एक नवयुवती पत्नी के साथ जीवन-यापन कर सकूँगा?'' एक वीतराग गृहस्थ, जिसमें विवेकोदय हो चुका है, सदा यह सोचता रहता हैह्न ''मैं कब अपनी पत्नी के चंगुल से मुक्त हो कर आत्म-चिन्तन के लिए वन को प्रस्थान कर सकूँगा?'' आप इन चिन्तनों के अन्तर पर ध्यान दें।

अपने हाथों में मृत्तिका-पात्र लिये हुए तथा गैरिक परिधान धारण किये हुए सहस्रों नवयुवक स्नातक तथा नवयुवक चिकित्सक गम्भीर ध्यान तथा प्राणायाम-साधना के लिए उत्तरकाशी तथा गंगोत्तरी में गुहा की खोज में मेरे पास आते हैं तथा विज्ञान के कुछ युवक शोध-छात्र तथा कुछ राजकुमार सख्त कालर तथा टाई-युक्त रेशमी शूट (वस्त्र) में विवाह के लिये लड़कियों की खोज में पंजाब तथा कश्मीर जाते हैं। क्या इस संसार में सुख है अथवा दुःख? यदि सुख है, तो ये शिक्षित नवयुवक व्यक्ति वनों को क्यों प्रस्थान करते हैं? यदि संसार में कष्ट है, तो ये नवयुवक कामिनी, कांचन तथा पद के पीछे क्यों पड़े रहते हैं? माया रहस्यमयी है। मोह रहस्यमय है। जीवन की

प्रहेलिका को तथा संसार की प्रलेहिका को समझने का प्रयास कीजिए।

सौन्दर्य एक मानसिक संकल्पना

माया मन की कल्पना के द्वारा तबाही करती है। स्त्री सुन्दर नहीं है; किन्तु कल्पना सुन्दर है। चीनी मधुर नहीं है; किन्तु कल्पना मधुर है। भोजन स्वादिष्ट नहीं है; किन्तु कल्पना स्वादिष्ट है। व्यक्ति दुर्बल नहीं है; किन्तु कल्पना दुर्बल है। माया तथा मन के स्वरूप को समझिए तथा बुद्धिमान् बनिए। मन की इस कल्पना का विचार द्वारा निरोध कीजिए तथा ब्रह्म में विश्राम लीजिए, जहाँ न कल्पना है और न विचार ही।

सुन्दरता तथा कुरूपता मन की मिथ्या कल्पनाएँ हैं। मन स्वयं एक मिथ्या तथा आभासी उपज है। अतः मन की कल्पनाएँ भी मिथ्या ही होनी चाहिए। वे सब मरुस्थल में मृगमरीचिका के समान हैं। जो वस्तु आपके लिए सुन्दर है, वही दूसरे व्यक्ति के लिए कुरूप है। सुन्दरता तथा कुरूपता शब्द सापेक्ष हैं। सुन्दरता मानसिक संकल्पना मात्र है। यह केवल मानसिक प्रक्षेपण है। सभ्य व्यक्ति ही शरीर की सुडौलता, सुष्ठ आकृति, चारु गति, ललित व्यवहार तथा मनोहर रूप के विषय में अधिक बातें करता है। अफ्रीका के हबशी में इन विषयों का कोई विचार नहीं होता है। वास्तविक सौन्दर्य एकमात्र आत्मा में ही है। सौन्दर्य मन में रहता है, पदार्थों में नहीं। आम मधुर नहीं है, आम का विचार मधुर है। यह सब वृत्ति है। यह मन का धोखा है, मन की संकल्पना है, मन की सृष्टि है। वृत्ति को नष्ट कीजिए, सौन्दर्य लुप्त हो जायेगा। पति अपनी कुरूप पत्नी में सौन्दर्य-सम्बन्धी अपने ही विचारों को विस्तारित करता है और काम-वासना के द्वारा उसे बहुत सुन्दर समझता है। शेक्सपीयर ने अपनी 'मिड समर नाइट्स ड्रीम' पुस्तक में इसे ठीक ही व्यक्त किया हैह्वह्व''कामदेव को अन्धे के रूप में चित्रित किया जाता है। वह जिप्सी महिला के रूप-रंग में हेलेन के सौन्दर्य का दर्शन करता है।''

इन्द्रियाँ तथा मन आपको प्रतिक्षण धोखा देते हैं। वे आपके वास्तविक शत्रु हैं। सौन्दर्य मानसिक सृष्टि की उपज है। सौन्दर्य कल्पना की उपज है। वह कुरूप स्त्री अपने पति के नेत्रों में ही बहुत सुन्दर प्रतीत होती है। मेरे प्रिय मित्रो! एक वृद्ध महिला की झुर्रीदार त्वचा में सौन्दर्य कहाँ है? आपकी पत्नी के शय्या-ग्रस्त होने पर सौन्दर्य कहाँ होता है? जब आपकी पत्नी क्रुद्ध होती है, तब उसमें सौन्दर्य कहाँ होता है? एक स्त्री के मृतक शरीर में सौन्दर्य कहाँ होता है? मुख का सौन्दर्य प्रतिबिम्ब मात्र है। वास्तविक अक्षय सौन्दर्यों का सौन्दर्यह्वह्वसौन्दर्यों का निर्झरह्वह्वआत्मा में ही प्राप्य है। आपने सार-पदार्थ की उपेक्षा की है और काँच के टूटे टुकड़े को पकड़ रखा है। आपने अपने अशुद्ध विचार, अशुद्ध मन, अशुद्ध बुद्धि तथा अशुद्ध जीवनचर्या से क्या ही गम्भीर भूल की है? क्या आपने अपनी भूल को अनुभव किया है? क्या कम-से-कम अब आप अपने नेत्र खोलेंगे?

सुन्दर पत्नी बहुत ही मनोहर होती है। जब वह युवती होती है, जब वह मुस्कराती है, जब वह सुन्दर वस्त्र पहनती है, जब वह गाती तथा पियानो अथवा वायलिन बजाती है, जब वह नृत्यशाला में नृत्य करती है, तब बहुत ही रमणीय होती है। किन्तु जब वह क्रुद्ध होती है, जब वह पति से अपने लिए रेशमी साड़ी तथा कनक-सूत्र न लाने के कारण झगड़ती है, जब वह तीव्र

उदर-शूल अथवा इसी प्रकार के रोग से पीड़ित होती है तथा जब वह वृद्धा हो जाती है, तब देखने में विकराल बन जाती है।

प्रकृति स्त्री को कुछ वर्षों तक विशेष सौन्दर्य, आकर्षण तथा लालित्य की भेंट प्रदान करती है, जिससे वह पुरुषों के हृदयों को अधिकार में कर सके। यह सौन्दर्य केवल ऊपरी होता है। यह शीघ्र क्षीण हो जायेगा, केश श्वेत हो जायेंगे तथा त्वचा शीघ्र झुर्रियों से भर जायेगी। दरजी, बुनकर, बेलबूटे काढ़ने वाला, शृंगार करने वाला तथा स्वर्णकार कुछ क्षणों के लिए ही हमें सुन्दर बनाते हैं। व्यक्ति उत्तेजना, प्रेमोन्माद तथा भ्रम में आ कर इस बात को भूल जाता है। यह माया है। इस माया का कभी विश्वास न कीजिए। सावधान रहिए। हे मानव! जाग जाइए। उस सौन्दर्यों के सौन्दर्य का पता लगाइए जो आपके अन्दर है, जो आपका अन्तर्तम आत्मा है। हे नारी! मीरा की भाँति गाइए और मीरा के 'गिरिधर-नागर' में विलीन हो जाइए।

क्या आपने कभी रुक कर यह विचार किया है कि 'सुन्दर' स्त्रियाँ, जो आपमें काम उद्दीप्त करती हैं, किससे संघटित हैं? अस्थि, मांस, रक्त, मूत्र, विष्ठा, पीप, स्वेद, कफ तथा अन्य मलों की पोटली! क्या आप ऐसी पोटली को अपने विचारों का स्वामी बनने देंगे? क्या आप अपने शाश्वत शान्ति तथा सुख का ऐसे क्षणिक, शोरबे के गन्दे घाल-मेल से विनिमय करेंगे? यह आपके लिए लज्जा की बात है! क्या आपको इच्छा-शक्ति, बुद्धि तथा विवेक ऐसे लज्जास्पद उद्देश्य के लिए ही प्रदान किये गये थे? क्या आपने सुना तथा देखा नहीं है कि शारीरिक सौन्दर्य ऊपरी होता है और प्रत्येक गुजरने वाली दुर्घटना, रोग तथा अवस्था के आश्रित है? **(अनूदित)**

एक महत्त्वपूर्ण विज्ञप्ति

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दिव्य सान्निध्य में अनुभूत निजी संस्मरण

दिव्य जीवन संघ के अन्तर्राष्ट्रीय परमाध्यक्ष विश्वविश्रुत हमारे परम आराध्य ब्रह्मलीन परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अति दुर्लभ सान्निध्य से प्राप्त मार्मिक अनुभवों, उनके आत्मोन्नयन, श्रेयमार्गोभिमुख आध्यात्मिकता से युक्त सर्वांगीण आदर्श जीवन यापन सम्बन्धी प्रभावी उपदेश, आदेश, सन्देश तथा उनके महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से निःसृत शिक्षाप्रद, आनन्दप्रद, रोचक एवं प्रेरक प्रसंगों तथा बहुविध साधना सम्बन्धी मधुर स्नेहिल संस्मरणों की लिखित अभिव्यक्ति के संकलन का शुभारम्भ अनेक सद्शिष्यों, भक्तों, साधकों तथा शुभेच्छुकों के विशेष हार्दिक अनुरोध-आग्रह को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यदि आप इसमें प्रतिभागी होना चाहते हैं तो उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित आपकी सारगर्भित विषय-सामग्री (टाइप करके भेजें तो उत्तम होगा) सन् २००९ के मार्च माह के अन्त तक अवश्य पहुँच जानी चाहिए। यथासम्भव यथाशीघ्र भेजें तो सराहनीय होगा। E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org द्वारा "Sharing my memory with Swami Chidananda" विषय से भेजें। जो डाक विभाग द्वारा अपनी विषय-सामग्री भेजना चाहते हैं, वे लिफाफे के बाहर ''स्वामी चिदानन्द-सन्निधि में मेरे संस्मरण'' (Sharing my memory with Swami Chidananda) लिख कर निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें : **द प्रेजीडेंट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड।**

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आन्तरिक और बाह्य जगत् से हमारा सम्बन्ध

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस सर्वोच्च, शाश्वत, परिपूर्ण परम सत्ता को हम श्रद्धापूर्ण प्रणाम करते हैं, जिनकी दिव्यता और परिपूर्णता के हम सब अविभाज्य अंग हैं। हम भले ही उसके प्रति जागरूक हों अथवा नहीं, किन्तु यह आन्तरिक सम्बन्ध इस जगत् के अन्य किसी भी सम्बन्ध से कहीं अधिक वास्तविक और सत्य है।

यदि हमने उस शाश्वत सम्बन्ध के प्रति जागरूक होना है, तो हमें अत्यन्त सतर्क, सचेत और सावधान होना पड़ेगा कि हमारे जो विभिन्न असंख्य बाह्य वस्तु-पदार्थों, व्यक्तियों, परिस्थितियों और अनुभवों से सम्बन्ध हैं, वह सब हमारी इस आन्तरिक जागरूकता को अन्य वस्तुओं की ओर मोड़ कर ले जाने वाले तत्त्व न बन जायें। यदि हम समझ-बूझ कर ध्यान नहीं रखेंगे, यदि हम ध्यानपूर्वक यह सतर्कता बनाये रखने में प्रयत्नशील नहीं रहेंगे, तो हमारी मानवीय प्रकृति तो ऐसी है कि यह हमें परम सत्ता से दूर ले ही जायेगी और हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को व्यर्थ की नगण्य वस्तुओं में ही बिखेर कर रख देगी।

''**अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च** (सम्पूर्ण भूतों का आदि, मध्य और अन्त भी मैं हूँ)।'' इस प्रकार भगवान् अपने उपदेश में इस आन्तरिक गुह्य सम्बन्ध को उद्घोषित करते हैं। इस महान् कृपा के होते हुए भी, इस महान् उपदेश कि 'भगवान् हमारे सब-कुछ, हमारे सर्वस्व हैं' के होते हुए भी व्यक्ति अभी भी ईश्वर-विस्मृति के गहन वन में भटक रहा है, ईश्वर-विमुखता के वन में भटक रहा है।

इसका वास्तविक कारण यह है कि व्यक्ति विकर्षणों के मध्य में रहते हुए इस जागरूकता को बनाये रखने के लिए सचेतनतापूर्वक और संकल्प-बद्ध हो कर प्रयत्न-शील नहीं होता। दिन-रात, सदा-सक्रिय विवेक-बुद्धि का उपयोग करते हुए यह देखते नहीं रहता कि बाह्य जगत् के बाह्यगामी अपवर्तनकारी प्रभाव को अपनी विरोधी आन्तरिक आत्म-सुदृढ़ता से प्रभावहीन करता रहे।

क्योंकि केवल ऐसा करने से ही यह सम्भव हो सकता है कि असंख्य वस्तुओं, लोगों, परिस्थितियों और अनुभवों के हमें अपनी ओर आकर्षित करने वाले इस संसार के आकर्षणों के होते हुए भी यह जागरूकता बनाये रख सकें। विवेकशील साधक वही है जो अपने अन्त:-करण को ऐसा बना लेता है कि इस अस्थायी, परिवर्तन-शील, क्षणभंगुर प्रतिभासित जगत् की बहिर्गामी, अपवर्तनकारी और विक्षेपकारी शक्ति को निष्प्रभावी कर दे और इसके विपरीत स्वामी रामतीर्थ के शब्दों में, ''पथ की बाधा को सफलता का साधना बना लें।'' वह इन ईश्वर-विस्मरणकारी शक्तियों तक को अपने भले में परिवर्तित कर लेता है और उन्हें ईश्वर जागरूकता में बने रहने में सहायक तत्त्वों में बदल देता है।

जैसा कि बवेरियन रहस्यवादी जैकोव बोहमे (Jakob Boehme) ने कहाह्न''प्रत्येक वस्तु ईश्वर को प्रकट करती है। सब-कुछ उस अनन्त का प्रतीक है। उसी परम सत्ता का स्मरण कराने के लिए ही इन सबका यहाँ अस्तित्व है।'' उन्होंने यह कह कर समस्त नकारात्मकता

को सकारात्मकता में परिवर्तित कर दिया कि जो भी आप देख, सुन, छू, सूँघ, चख या सोच सकते हैं, वह सब आपके मन को ईश्वर की ओर ले जाने वाला है, उस परम सत्ता के विचार को आपके हृदय में उदित करने वाला है।

किन्तु यदि आपके दृष्टिकोण और बाह्य जगत् के प्रति आपकी अनुभूति में ऐसा परिवर्तन लाना है, तो एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जिसे हम भुला नहीं सकते। जब यह सब बाह्य तत्त्व नहीं होते, जब कुछ भी आपका ध्यान बँटाने के लिए, बाहर खींच लेने, ध्यान भंग करने के लिए नहीं होताह्नह्नसम्भवतया आप अपने कक्ष में एकाकी बैठे होओ, आराम से, प्रकाश को बन्द करकेह्नह्नतब आप तत्काल ही भगवद्-चिन्तन में, भगवान् के ध्यान में क्यों नहीं गहरे उतर जाते? जिन तत्त्वों के विषय में आप सदा दोषारोपण करते हैं कि भगवद्-चिन्तन की अटूट धारा नहीं बनने देते, वह सब जब उस समय नहीं होते, तब फिर आप समाधि में क्यों नहीं चले जाते ?

इसका कारण यह है कि हमारे सम्बन्धों का एक अन्य आयाम भी है। हम अतीत की स्मृतियों से जुड़े हुए हैं। हम भविष्य के स्वप्नों, कल्पनाओं से भी जुड़े हुए हैं। इनका सम्बन्ध दूर भविष्य के साथ न हो कर, अभी कल ही आपने क्या करना है, इससे भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त हमारे अन्य वस्तु-व्यक्तियों के प्रति भी भावनात्मक सम्बन्ध हैं। हम अपने मनोद्गारों से भी सम्बन्धित हैं। यह सारा हमारा आन्तरिक सम्बन्धों का जगत् है जो भगवान् के साथ के हमारे शाश्वत सम्बन्ध का विरोधी है।

इस प्रकार हम दो संसारों में रहते हैंह्नह्नदोनों मिथ्या, दोनों बाधक। अत: हमें सतर्क और सावधान रहना होगा। सचेत जागरूकता का अभ्यास करना होगा। केवल वस्तु और व्यक्तिपरक बाह्य जगत् के सम्बन्ध में ही नहीं, प्रत्युत उतनी ही सावधानी, सतर्कता और चौकसी यह देखते रहने में लानी होगी कि हमारा अपना मानसिक जगत् हमारा अतीत, वर्तमान और भविष्य एक ऐसा तत्त्व न बन जाये जो हमें भगवान् से दूर खींच ले जाने वाला हो, ध्यान दूसरी ओर खींचने वाला हो, ध्यान भंग कर देने वाला हो और हमें स्मृतियों, कल्पनाओं, भयों, इच्छाओं, भावनाओं और उद्गारों के सूक्ष्म आन्तरिक जगत् में डुबा देने वाला हो।

उपनिषदों का कथन है कि विचारों का यह प्रवाह तो मन में सदा रहता है। और जब तक आप जाग्रत और सावधान हो कर यह ध्यान नहीं रखते कि यह विचार-प्रवाह आपको किस दिशा की ओर ले जा रहा है, आप भ्रमित हो जाते हैं। आप ध्यान के लिए बैठे होंगे; किन्तु यदि आप सावधान रह कर विचार-धारा को भगवान् की ओर मोड़ते नहीं रहते, तो विश्व के किसी दूसरे ही कोने में कहीं दूर पहुँच जायेंगे। व्यक्ति को प्रयासपूर्वक दिव्यत्व की ओर, परम तत्त्व की ओर स्वयं को स्थिर करके रखना होगा।

केवल राजनीति के अनुसार ही यह कथन सत्य नहीं है कि 'निरन्तर सावधानी स्वतन्त्रता का मूल्य है।' हमारे आन्तरिक जीवन और नाम-रूपों के इस भौतिक जगत् में हमारे व्यक्तिगत बाह्य भौतिक जीवन के लिए भी यह उतना ही सत्य है। यदि आप मुक्ति की महिमा, उसकी भव्यता, महानता और सौन्दर्य का चिन्तन करें, तो 'सावधानी' उसका अति-अल्प मूल्य है।

और सचेत, स्वैच्छिक प्रयत्न के बिना कुछ भी सुलभ नहीं है। धन्य है वह साधक जिसके लिए ऐसा प्रयास वांछनीय है, जो ऐसे प्रयास के लिए प्रयत्नशील है,

जिसके लिए ऐसा जीवन इस प्रकार है जैसे संगीतकार के लिए संगीत, कवि के लिए कविता अथवा कलाकार के लिए उसकी कला होती है। यदि यह आध्यात्मिक सतर्कता स्वयं इसी के लिए की जाती है, तब यह ऐसे हो जाती है जिससे आप खूब उन्नति करते हैं। यह आपके लिए अत्यन्त वांछनीय हो जाती है। यह आपके लिए भार स्वरूप न हो कर आनन्द प्रदान करने वाली, उन्नत और विकसित करने वाली हो जाती है।

एक विद्वत्तापूर्ण कहावत, जिसे सारा संसार जानता है, किन्तु जिसे लोगों ने बड़ी सरलता से उपेक्षित कर रखा है, यह हैह्वह्व''परिश्रम के बिना कुछ भी सुलभ नहीं।''

पहलवान को देखें, वह अपने शारीरिक गठन के लिए कितने घण्टे व्यायामशाला में खर्च करता है। खिलाड़ी को देखें, वह ओलम्पिक में भाग लेने के लिए कितने वर्ष निरन्तर संयम और परिश्रमपूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करता है। यदि एक स्वर्ण-पदक वह प्राप्त कर भी ले, तो यह कुछेक दिनों का ही नाम-यश है, फिर सब भुला दिया जाता है।

यदि नश्वर वस्तुओं के लिए वह इतना परिश्रम करने को तत्पर है, तब फिर उस अनश्वर की प्राप्ति के लिए, शाश्वत के लिए परीश्रम करने को, व्यक्ति को कितना अधिक प्रसन्नतापूर्वक लगना चाहिए? हमें अटूट प्रयास, सावधानी और सतर्कतापूर्वक, अत्यन्त कुशलता से इन बाह्य और आन्तरिक आकर्षणों को अपने लाभ की ओर ले जाना चाहिए, जिससे कि वे हमारी साधना के विरोधी न रह कर हमारी साधना के अनुकूल बन जायें।

यह कर्म-कौशल है। यही व्यक्ति की बुद्धि का, उसकी विवेकशीलता और विश्लेषणात्मक बुद्धि का सही उपयोग है। अत: आइए, हम ज्वलन्त आन्तरिक उत्साह के साथ, गहन-गम्भीर इच्छा के साथ इस विरोधाभासी प्रतीत होने वाली परिस्थिति का समाधान खोजें कि भगवान् हमारे सर्वस्व होते हुए भी, उनसे हमारा निकटतम और गहनतम सम्बन्ध होने पर भी, उनके साथ शाश्वत और अनादि सम्बन्ध होने पर भी, उस सम्बन्ध को इतनी सरलता से क्यों भुला दिया जाता है, और इस बाह्य और भीतरी संसार के अस्थायी क्षणिक सम्बन्ध के समक्ष क्यों नकार दिया जाता है?

इस विरोधाभास की समाप्ति का केवल एक ही उपाय है कि हम आध्यात्मिक परिस्थिति को पूर्णतया सही रूप से, अपने विवेक से, अपनी बुद्धि से, गम्भीरतापूर्वक और पूर्ण जागरूक रह कर समझें और जो-कुछ वास्तव में है, उसे वही देखें। अत्यन्त कठिन होने पर भी यह एक ऐसी युक्ति है कि यदि व्यक्ति इस सही सूत्र को और इस रहस्य को जान लेता है, तो यह विरोधाभास लुप्त हो जाता है, तब यह समस्या नहीं रहता, यह आपका सहायक बन जाता है।

ब्रदर लारेंस ने यही किया। रहस्यवादियों ने यही किया। हमारे उपनिषदीय महान् द्रष्टाओं ने भी इसी प्रकार करके इसको प्राप्त किया और हमें सिखाया। उन्होंने सब-कुछ के बीच में ही रहते हुए भगवान् की विद्यमानता को सतत बनाये रखने की, परम सत्ता की जागरूकता निरन्तर बनाये रखने की साधना की। इन प्रतीत होती हुई बाधाओं को हम किस प्रकार सतत अटूट भगवद्-चिन्तन के सहायक तत्त्वों के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं, इस पर भगवद्-इच्छा से हम आगामी वार्ता में चर्चा करेंगे।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

भावातीत विद्यमानता २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

'एकात्मप्रत्ययसारम्'ह्वह्वयहाँ आत्मा की अद्‌भुत विशेषता बतायी गयी है। आत्मा की परिभाषा आत्मा ही हो सकती है। जिस तुरीय का ज्ञान प्राप्त करने में एक आत्मप्रत्यय ही सार अथवा प्रमाण है, वह 'एकात्मप्रत्ययसार' है। किसी और रूप से इसकी परिभाषा नहीं दी जा सकती। कथन हैह्वह्वराम-रावण का युद्ध राम-रावण का ही युद्ध है, उसकी तुलना किसी और युद्ध से नहीं की जा सकती। किससे तुलना करेंगे आप राम-रावण-युद्ध की? आप कह सकते हैंह्वह्वविशालता में सागर के समान, अनन्तता में आकाश के समान, आलोक में सूर्य के समान, मिठास में चीनी के समान। किन्तु, राम-रावण का युद्ध किसके समान था? वह तो बस, राम-रावण के युद्ध के समान ही था। इतनी ही कवि के विचारों की उड़ान है। ''आकाश आकाश की भाँति है, सागर सागर की भाँति है, राम-रावण का युद्ध राम-रावण के युद्ध की भाँति था।'' अत: आत्मा भी ऐसा ही है। आत्मा आत्मा की भाँति है। आप आत्मा की उपमा किसी अन्य वस्तु से नहीं दे सकते, क्योंकि यह अनुपम है। इस दिशा में यदि कोई प्रयास भी किया जाये, तो उपमा योग्य वस्तु कोई कार्य रूप ही तो होगी जिसका उद्‌भव पश्चात्काल में हुआ। निश्चयेन, यह तो हास्यास्पद विषय बन जायेगा। इसीलिए इसे **'एकात्मप्रत्यय-सारम्'** कहा जाता है।

'एकात्मप्रत्ययसारम्' तीन पदों का संयुक्त रूप है, वे हैंह्वह्व'एकत्व, आत्मत्व और सारत्व। यह समस्त विषयों का एक सार रूप आत्मा है। आत्मा है, इसलिए यह एक ही हो सकता है। आत्मा है, इसलिए सार है। आत्मा वह है जो अपने अस्तित्व के द्वारा स्वयं को जानता है, उसे जानने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं है। यह किसी भी बाह्य प्रमाण रहित अपने अस्तित्व से ही प्रकाशमान है। आत्मज्ञान के विषय में प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, उपमा आदि की आवश्यकता नहीं है। किसी प्रकार के तर्क अथवा भूमिका आदि से भी इसका अनुमान लगाना कठिन है। यह प्रत्यक्ष दर्शन से परे है, अनुपमेय है, अनिर्वचनीय है। यह आत्मा है जिसका अभिप्राय है कि यह किसी अन्य के द्वारा प्रत्यक्ष नहीं किया जा सकता। आत्मा को आत्मा ही प्रत्यक्ष कर सकता है। यहाँ आत्मा और अस्तित्व समानार्थक हैं। अस्तित्व ही आत्मा है। आत्मा विषयाश्रित नहीं है, इसका स्वत्व इससे पृथक् नहीं किया जा सकता।

आत्मज्ञान तो सहजावबोध अथवा अन्तर्ज्ञान है जो सत्य के ग्रहण का सापेक्ष ज्ञान नहीं है और मन तथा इन्द्रियों के व्यापार से स्वतन्त्र है, यहाँ अस्तित्व (ज्ञाता) ज्ञान के साथ एकरूप हो जाता है और ज्ञान ज्ञेय के साथ सारूप्यता को प्राप्त होता है। यहाँ ज्ञान का विषय स्वयं ज्ञान और सहजावबोध है। विषय जब ज्ञान के बाहर हो, इसे प्रत्यक्ष दर्शन कहा जाता है। इन्द्रिय-

जनित ज्ञान और अन्तर्ज्ञान में यही अन्तर है। जहाँ ज्ञान का विषय ज्ञान की अत्यन्त सन्निकटता (अनन्तरिता) को प्राप्त करता है अर्थात् ज्ञान और ज्ञान का विषय जहाँ पृथक् नहीं रह जाते, एकत्व को प्राप्त कर लेते हैं, वह अन्तर्ज्ञान अथवा इन्द्रियातीत ज्ञान है। उस समय यह भेद करना कठिन हो जाता है कि यह विषय है जो स्वयं को जानता है अथवा ज्ञान है जो स्वयं को जानता है। दोनों के मध्य का भेद इसी प्रकार लुप्त हो जाता है जैसे दो सागर एक-दूसरे में लीन हो गये हों। ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञानह्वह्वइन तीनों का यहाँ एकीभाव हो जाता है। यही है आत्मत्व।

'सलिल एको द्रष्टा'ह्वह्वबृहदारण्यकोपनिषद् में याज्ञवल्क्य कहते हैंह्वह्वआत्मा तो सागर के अजस्र जल-प्रवाह (ज्वार) की भाँति है जिसकी न कोई सतह है और न सीमा। आत्मा अद्वैत, द्रष्टा, ज्ञाता, अनुभव-कर्ता और बोधकर्ता है, उसका कोई विषयपरक प्रतिरूप नहीं है। यह स्वयं को जानता है, दूसरों को नहीं; क्योंकि दूसरे इसी के अंश हैं। अत: आत्मा के ज्ञान का अभिप्राय है सम्पूर्ण सत्ता का ज्ञान। इस आत्मा का ज्ञान, उस आत्मा का ज्ञान, इस व्यक्ति का ज्ञान, उस व्यक्ति का ज्ञानह्वह्वऐसा नहीं है यह आत्मज्ञान। यह केवल उस 'एक' आत्मा का ज्ञान है। यह अद्वितीय है। आत्मा एक हैह्वह्व**'एकात्मप्रत्ययसारम्'**। एक आत्मा परमात्मा नाम से अभिहित है जो तथाकथित असंख्य जीवात्माओं से पृथक् है। यह परम आत्म-तत्त्व है, इसलिए परमात्मा है। श्रीमद्भागवत में कहा हैह्वह्व**''ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते।''** कैवल्य, सार्वभौम और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों से इसे ब्रह्मन्,परमात्मन् अथवा भगवान् कहा जाता है। स्वयं में यह ब्रह्म है, पूर्णस्वरूप है; सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता के रूप में यह परमात्मा है, भक्तों के लिए उनका प्रिय भगवान् है।

द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैतह्वह्वसब इसी आत्मा के लिए ही भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हैं। समस्त दर्शनों की विचारधाराओं का परिणाम इसी एक आत्म-तत्त्व में विराम को प्राप्त होता है। द्वन्द्व शान्त हो जाते हैं, तर्क समाप्त हो जाते हैं, दर्शन मौन हो जाते हैं, शान्ति का साम्राज्य छा जाता है। एक महान् गुरु का कथन हैह्वह्व ''मौन ही आत्मा है।'' एक बार एक भक्त गुरु के पास आया और कहाह्वह्व''मुझे आत्मा के विषय में उपदेश करें।'' गुरु मौन रहे। शिष्य ने पुन: प्रश्न कियाह्वह्व''गुरु जी, मुझे आत्मा के विषय में कुछ उपदेश करें।'' पुन: गुरु मौन रहे। तीसरी बार प्रश्न पूछने पर भी गुरु मौन रहे। चौथी बार वही प्रश्न जब शिष्य ने दोहराया, तो गुरु जी बोलेह्वह्व''मैं तो बता रहा हूँ, तुम सुन ही नहीं रहे; क्योंकि मौन ही आत्मा है।'' उस मौन में ब्रह्माण्ड का सारा उपप्लव, सारा संक्षोभ शान्त हो जाता है। उस महत् मौन में इन्द्रियों का महास्वन (उच्चघोष) निहित है, विश्व का सम्पूर्ण शोर-गुल इसी 'मौन' में आस्थित है, इसी में विलीन है। यहाँ, यह मौन किसी भी प्रकार के शब्द से, जो मनुष्य उच्चारण करता है अथवा कर सकता है, उससे उत्कृष्टतर है। मौन की भाषा किसी भी अन्य प्रचलित भाषा से अधिक प्रभावशाली है। दार्शनिकों के न्यायिक तर्कों की अपेक्षा यह कहीं अधिक पूर्ण व्याख्या है। किसी अन्य साधन की अपेक्षा यह समस्त मौनों का मौन सत्य को कहीं अधिक बोधगम्य बना कर सत्य का अर्थ सूचित करता है, क्योंकि इसे शब्दों में अभिव्यक्त करने के लिए हमें

उसकी अपेक्षा निम्न स्तर पर उतरना पड़ता है और इसे बाह्य विषय मान कर हम इसका चिन्तन करने लगते हैं।

केनोपनिषद् इन शब्दों में हमें सावधान करता हैह्वह्व''जो इसे जानते हैं, वे वस्तुत: नहीं जानते। जो इसे नहीं जानते, वे जानते हैं।'' आप यदि सोचते हैं कि आप इसे जानते हैं, तो नहीं जानते और जब आप जानते हैं, आप चिन्तन नहीं करते, सोचते नहीं, बस आप हैं! आप 'वह' हो गये हैं और आप 'हैं' वही! और यही है वास्तविक ज्ञान। ज्ञान अभिव्यक्ति नहीं है, प्रत्युत (सारूप्यता) सत्ता है। होना नहीं है। योगवासिष्ठ की भाषा में इसे 'सत्ता सामान्य' कहते हैं जो सभी वस्तुओं की एकमात्र सामान्य सत्ता है, किन्हीं विशेष शरीर, मन अथवा व्यक्तियों की नहीं। यह 'भावातीत सत्ता' है, इसे 'यह', 'वह' से अभिहित नहीं कर सकते। सामान्य भाषा में यह न सत् है और न ही असत् है। किसी विषय के भाव में यह सत् नहीं है और यह असत् भी नहीं है। हम किसी वस्तु की विद्यमानता मानते हैं; क्योंकि उसे हम देख सकते हैं, सोच सकते हैं, सुन सकते हैं, हाथों से पकड़ सकते हैं। किन्तु सत्य इस प्रकार का सत् नहीं है। किन्तु इसे हम असत् भी तो नहीं कह सकते। यह सत् और असत्, दोनों से अतीत है।

भगवद्गीता का कथन हैह्वह्व''**अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।**'' समस्त भूत-प्रपंच का स्रोत यह ब्रह्म अलौकिक शाश्वतता है। ''**न असदासीत् नो सद् आसीत्**''ह्वह्वऋग्वेद ने घोषणा की है। आदि काल में क्या था? न सत् था, न असत् था। परिभाषाएँ तो मनुष्य देते हैं और ये मनुष्य ही कार्य रूप में पश्चात् काल में आये हैं। उसकी परिभाषा कौन करे जो वस्तुओं के कारण से भी पूर्व था और 'ईश्वर' की अवस्था से भी पूर्व था? इसका वर्णन कौन कर सकता है? परीक्षण के तौर पर इसे '**एकात्मप्रत्ययसारम्**' कह कर इसकी विशेषता बताने के अतिरिक्त आप इसके विषय में कह भी क्या सकते हैं? इस 'आत्मा' को आप कैसे ग्रहण करते हैं? 'यह है'ह्वह्व '**अस्ति इति एव उपलब्धव्य:**' (क. उ. २/३/१३)। कठोपनिषद् के अनुसार एवंविध ही इसे जानना चाहिएह्वह्व'यह है'। सन्त आगस्ताइन ने भी कहा हैह्वह्व''जो है, इस रूप में उसे जानो।'' सब सत्यों का सत्य क्या है? वह, जो है, एक सामान्य सत्ता, 'सत्ता सामान्य, '**एकात्मप्रत्ययसारम्**', यही ब्रह्म है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

सेवा और प्रेम

धर्म एक है। ईश्वर एक है। धर्म की वास्तविक भाषा प्रेम की भाषा है। मनुष्य से प्रेम करना और उसकी सेवा करना तथा उस परम दिव्य की पूजा और खोज में जीवनार्पण कर देनाह्वह्वयही धर्म का पथ है। संक्षेप में धर्म का हृदय यही दो बातें हैंह्वह्वसेवा और प्रेम।

स्वामी चिदानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

भारत के वीर और वीरांगनाएँ ५

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिवि

शिवि सूर्यवंशी राजा थे। काशी उनकी राजधानी थी। वह दान के लिए विख्यात थे। एक बाज से डर कर एक कबूतर उनकी शरण में आया। शिवि ने उसे उसके प्राणों की रक्षा का वचन दिया।

बाज की भूख मिटाने के लिए शिवि कबूतर के बदले अपने शरीर का मांस काट कर देने लगे। जब उनका सारा शरीर कट गया, तब बाज और कबूतरह्नह्नदोनों अपने असली रूप में (देवताओं के रूप में) प्रकट हुए और उन्हें कई वर दिये। वह स्वर्ण के विमान पर चढ़ कर स्वर्ग गये।

करुणा से बढ़ कर दूसरा कोई गुण नहीं है। काशिराज शिवि ने स्वर्ग और अमर यश प्राप्त किया। हे प्रिय शिवराम! दुर्बलों की रक्षा करो।

शबरी

शबरी जंगलों में रहने वाली भील जनजाति की महिला थीं। वह श्री राम की भक्त थीं। वह बहुत धर्मनिष्ठ थीं। अपने वनवास के समय श्री रामचन्द्र शबरी के आश्रम में पधारे थे। शबरी ने राम को अर्घ्य प्रदान किया और कुछ फल भी खिलाये, जिन्हें उन्होंने पहले खुद चख कर देखा कि वे मीठे हैं या नहीं। चूँकि शबरी ने उन फलों को बड़ी भक्ति के साथ अर्पित किया था, इसलिए राम ने जूठे होने पर भी उन्हें बड़े स्वाद के साथ खाया।

वस्तुत: प्रेममय हृदय ही मुख्य वस्तु है। ईश्वर बहुमूल्य भोग नहीं चाहता। जो सच्चा भक्त भगवान् के चरणों में अपने को पूर्णतया समर्पित कर देता है, भगवान् उसके दास बन जाते हैं।

अम्बरीष

एक सूर्यवंशी राजा थे। उनका नाम अम्बरीष था। वह भगवान् वासुदेव के बड़े भक्त थे। वह एकादशी का व्रत रखते थे। एक बार द्वादशी के दिन उन्होंने भगवान् की पूजा की और ब्राह्मणों को भोज दिया। वह भी आहार ग्रहण करने वाले थे, इतने में ऋषि दुर्वासा आये। राजा ने उनका स्वागत किया। ऋषि स्नान के लिए नदी पर गये। बहुत देर तक लौटे नहीं। राजा ऋषि से पहले भोजन नहीं कर सकते थे, इसलिए पारण करने के लिए केवल पानी पी लिया।

दुर्वासा स्नान करके आये। राजा ने पानी पी लिया था, इससे वे बड़े क्रुद्ध हुए। अम्बरीष का संहार करने के लिए उन्होंने एक राक्षस की सृष्टि की। लेकिन भगवान् ने उनकी रक्षा के लिए अपना चक्र भेज दिया। उस चक्र ने राक्षस का संहार कर दिया और दुर्वासा पर भी आक्रमण करने लगा। ऋषि भय से भागने लगे। वह वासुदेव की शरण गये। प्रभु ने कहाह्नह्न''मैं कुछ नहीं कर सकता, अम्बरीष की ही शरण में जाओ।'' तब अम्बरीष ने भगवान् की स्तुति की और चक्र को शान्त किया। इस प्रकार अम्बरीष ने ऋषि की रक्षा की।

प्यारे बच्चो! अपनी सत्ता या सम्पत्ति का घमण्ड न करो। घमण्ड पतन की ओर ले जाता है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

योग द्वारा स्वास्थ्य :

वज्रासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

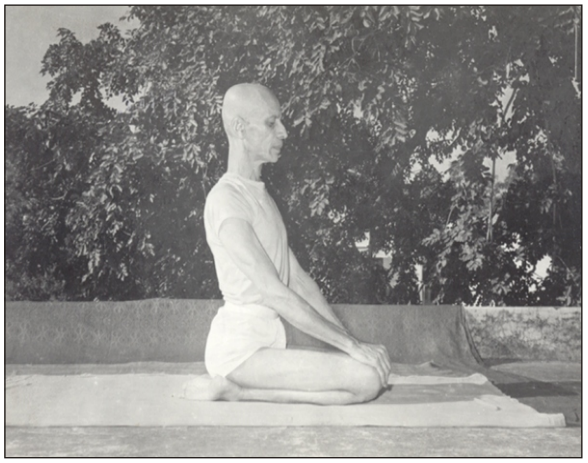

विधि

घुटनों के बल भूमि पर बैठ जायें। धीरे-धीरे नितम्बों को एड़ियों के मध्य में टिकायें। पिण्डलियों की मांसपेशियाँ जंघाओं को स्पर्श करें। पैर की उँगलियों से ले कर घुटनों तक के उपांग भूमि पर टिके रहने चाहिए। शरीर का सम्पूर्ण भार घुटनों तथा गुल्फों पर टिकाना चाहिए। आपको अभ्यास के प्रारम्भ में अपनी जानु तथा गुल्फ-सन्धियों में किंचित् पीड़ा अनुभव हो सकती है, किन्तु यह अभ्यास से शनैः-शनैः दूर हो जायेगी। दाहिने हाथ की हथेली को दाहिने घुटने पर तथा बायें हाथ की हथेली को बायें घुटने पर रखें। मेरुदण्ड तथा ग्रीवा को सीधा रखें। यह अनेक लोगों के लिए सुविधाजनक बैठने का आसन हो सकता है।

लाभ

इस आसन में बैठने पर शरीर में स्थिरता आती है, जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण शरीर में रक्त तथा प्राण का प्रवाह सुव्यवस्थित रूप से होता है, जो कि ध्यान के लिए एक पूर्वापेक्षा है। इस आसन से कटि-प्रदेश की शक्ति में वृद्धि होती है, स्नायु-तन्त्र स्वस्थ बनता तथा प्राण-शक्ति में सन्तुलन आता है। यदि कोई व्यक्ति भोजन के तुरन्त बाद वज्रासन में आधे घण्टे तक बैठे, तो भोजन अच्छी प्रकार से पच जायेगा। इस आसन से पैरों तथा जंघाओं के स्नायु तथा मांसपेशियाँ सुदृढ़ हो जाती हैं।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

भगवन्नाम : प्रत्येक रोग की सर्वोत्तम औषधि

भगवन्नाम की शक्ति अद्भुत है। उनके नाम को सदा अध्ययन करते, खेलते तथा कार्य करते समय, भोजन तथा विश्राम करते समय दोहराते रहें। कोई भी नाम यथा श्री राम, ॐ नमः शिवाय, जीसस, अल्लाह चुन लें और सदा दोहराते रहें। प्रभु का नाम प्रत्येक रोग की सर्वोत्तम औषधि है।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

फिर, चाहे कुछ भी हो

स्वामी रामराज्यम्

उत्तर प्रदेश में कानपुर के निकट कभी किसोरा नामक एक हिन्दू राज्य था। वहाँ का राजा था सज्जनसिंह। उसकी दो सन्तानें थींह्लपुत्र लक्ष्मणसिंह तथा पुत्री ताजकुँवरि। अपनी दोनों सन्तानों को उसने युद्ध-कला में प्रवीण कर दिया था।

उन दिनों दिल्ली में कुतुबुद्दीन ऐबक का शासन था। उसके सैनिकों ने पूरे देश में उत्पात मचा रखा था। एक दिन लक्ष्मणसिंह और ताजकुँवरि घोड़ों पर चढ़ कर एक जंगल से हो कर कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुतुबुद्दीन के सैनिकों ने उन्हें देख लिया और उन पर आक्रमण कर दिया। भाई-बहन ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं और वे उन सैनिकों का सामना करने लगे। भाई ने पाँच सैनिकों के सिर काट लिये। बहन भी भाई से पीछे नहीं रहने वाली थी। उसने भी पाँच सैनिकों का काम तमाम कर दिया। बचे हुए सैनिक जान बचा कर भागे। उन लोगों ने कुतुबुद्दीन को पूरी बात बतायी और यह भी कहाह्लह्ल''ताजकुँवरि आपकी बेगम बनने लायक है।''

कुतुबुद्दीन ने किसोरा पर चढ़ाई कर दी। किसोरा छोटा राज्य था। उस राज्य के सैनिकों की संख्या भी थोड़ी थी। किसोरा के सैनिक धराशायी होने लगे।

जब लक्ष्मणसिंह और ताजकुँवरि ने यह देखा तो वे दोनों घोड़ों पर चढ़ कर युद्धभूमि पर आ गये। न जाने कितने शत्रुओं को उन्होंने मार गिराया। कुतुबुद्दीन दूर से ताजकुँवरि को देख रहा था। वह चिल्ला कर बोलाह्लह्ल''जो कोई उस लड़की को जीवित पकड़ कर लायेगा, उसे मुँहमाँगा इनाम दिया जायेगा।''

इनाम के लालच में कुतुबुद्दीन के सैनिक ताजकुँवरि की ओर बढ़े। ताजकुँवरि ने देखा कि सैनिक उसके निकट आते जा रहे हैं। उसने भाई की ओर निहारा, भाई ने उसकी ओर।

बहन ने भाई से कहाह्लह्ल''भइया, अपनी बहन की लाज बचाओ।''

भाई की आँखों में विवशता के आँसू आ गये।

बहन ने कहाह्लह्ल''भइया, रोना नहीं। हिम्मत रखो। मेरी पवित्रता की रक्षा करो। उठाओ तलवार।''

लक्ष्मणसिंह समझ गया कि ताजकुँवरि क्या कह रही है। उसने एक ही वार में तलवार से ताजकुँवरि का सिर शरीर से अलग कर दिया। फिर शत्रुओं को मारते-मारते वह भी मारा गया।

कुतुबुद्दीन विजयी हुआ, लेकिन उसे मिला ताजकुँवरि का निर्जीव शरीर।

बच्चो सोचो, किस प्रकार के रहे होंगे वे भाई-बहन। अपनी लाज बचाने के लिए ताजकुँवरि ने और बहन की लाज बचाने के लिए लक्ष्मणसिंह ने क्या कर दिखाया! उनकी अनुपम वीरता और निर्भीकता को बुद्धि ठीक से सोच भी नहीं पाती। अपनी लाज बचाने का प्रश्न हो, दूसरों की लाज बचाने का प्रश्न हो, समाज की लाज बचाने का प्रश्न हो, देश की लाज बचाने का प्रश्न हो या धरती माता की लाज बचाने का प्रश्न होह्लह्लइसे हमें अनदेखा नहीं करना है, नहीं तो हम कायर कहलायेंगे। लाज पर कुठाराघात करने वालों का और उनके द्वारा उत्पन्न घिनौनी परिस्थितियों का निर्भीकतापूर्वक सामना करना है हमेंह्लह्लफिर चाहे कुछ भी हो! □□□

परात्पर तक पहुँचिए

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हे शाश्वत, सर्वातीत, परम दिव्य सत्ता, आपको श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं! आप, जो मन-वाणी से परे हैं, मनुष्य की विचार-शक्ति, तर्क-शक्ति, कल्पना-शक्ति और विवेक-शक्ति से परे हैं; आप, जो ऐसी अवर्णनीय, अकथनीय सत्ता हैं, जिसे केवल निज आत्मा की गहराई में अनुभव ही किया जा सकता है; और जिसे केवल वही अनुभव कर सकते हैं जिन पर आप कृपा करके स्वयं को प्रकट करने के लिए चुनते हैं। आपकी दिव्य कृपा-वृष्टि हम सब पर हो!

हमारे उन परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को श्रद्धापूर्ण प्रणाम है, जिन्होंने हमें उस सर्वातीत का ज्ञान, आत्मज्ञान अथवा परमात्म ज्ञान, परम सत्ता का ज्ञान प्रदान किया। उनकी गुरु-कृपा और आशीर्वाद हम सब पर निरन्तर रहें!

हे साधक वृन्द! सदैव सर्वातीत तक पहुँचिए! अपनी वर्तमान आध्यात्मिक उपलब्धियों, आध्यात्मिक उन्नति अथवा प्राप्ति से सन्तुष्ट न रहें! लगे रहें! सदैव ऊपर की ओर बढ़ते चलें! अपनी अब तक की प्राप्ति, सफलता, चेतना के स्तर, उन्नति और अनुभूति की अवस्था से भी अतीत तक पहुँचने का प्रयास करते रहें। इसी में उच्चतम अनुभव प्राप्त करने का रहस्य छिपा हुआ है।

हमारे स्थूल, सूक्ष्म और कारणह्वह्वतीनों शरीरों से अतीत सूक्ष्म अति-भौतिक परम तत्त्व है। वही वास्तविक है जिसको पाना है। वही निधि है, अमूल्य रत्न है, आपके भीतर के स्वर्ग का साम्राज्य है। पंचकोषों से भी परे कोई है जो दृश्य कोष और अदृश्य कोषों से अतीत है। यह परम कोष नहीं, अति कोष है; बल्कि यह कोई कोष है ही नहीं, सभी कोष इससे पीछे छूट जाते हैं। इन पंचकोषों को पीछे छोड़ कर उसे प्राप्त करें जो इनसे अतीत है। जाग्रत, स्वप्न और गहन सुषुप्ति की अवस्था से परे कुछ हैह्वह्ववही है जो इन तीनों अवस्थाओं का द्रष्टा है। उसको खोजने का, जानने का और अन्वेषण करने का प्रयास करें। इसी ज्ञान में परम चैतन्य का तथा चेतना की उन तीनों अवस्थाओं से अतीत जाने का रहस्य निहित है जो कि सामान्य मनुष्य के अनुभव की पहुँच के भीतर है।

असंख्य, विविध नाम-रूपों और वस्तु-पदार्थों के इस मानव-जगत् में, इस बाह्य जगत् और सुदूर अन्तरिक्ष में सूर्य, चन्द्रमा, सितारों से अतीत, सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी से देखे जा सकने वाले समस्त नक्षत्रों इत्यादि सबसे परे पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश के पंचतत्त्वों से निर्मित समस्त दृश्य जगत् से अतीत जो परम तत्त्व हैह्वह्वउसे जानने का, उस तक पहुँचने का प्रयास करें। इसी में मोक्ष का रहस्य निहित है।

द्रष्टव्य के परे अदृश्य है। कहा गया है कि 'द्रष्टव्य ही विश्वसनीय है'; किन्तु 'अदृश्य वास्तविकता' इस दृश्य से कहीं अधिक सत्य हैह्वह्वमानव-जगत् के

सीमित व्यावहारिक सत्य से कहीं अधिक विश्वसनीय है। अतः दृश्य से परे जायें और सूक्ष्म अदृश्य परम सत्ता को जानने का प्रयत्न करें। वही ऐसा एक विशिष्ट ज्ञान और कला है जो आपको दृश्य से परे अदृश्य के साम्राज्य तक ले जाने योग्य बना देगा।

अतः सदा उस परम सत्ता को जानें जो सर्वातीत है। सदैव उसी के जिज्ञासु बनें जो सामान्य अनुभव से ऊपर है, जो उस सबसे अतीत है जो हमें यहाँ जानने में आता है। उस अदृश्य, अज्ञात, अलक्ष्य और सर्वातीत परम तत्त्व के जिज्ञासु रहें। जो सबसे परे है, परात्पर है, वहीं तक पहुँचें। उसी की खोज में लगे रहें। उस सर्वातीत परमात्मा की अनुभूति की सदा कामना करें। स्वयं से भी अतीत जा कर उस सर्वातीत परम प्रभु तक की उड़ान भरें। **(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)**

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क		रु. १५०/-
	प्रवेश-शुल्क	रु. ५०/-
	सदस्यता-शुल्क	रु. १००/-
२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)		रु. १००/-
३. आजीवन सदस्यता-शुल्क		रु. ३,०००/-
४. संरक्षकता-शुल्क		रु. १०,०००/-
५. नयी शाखा खोलने का शुल्क**		रु. १०००/-
	प्रवेश-शुल्क	रु. ५००/-
	सम्बद्धता-शुल्क	रु. ५००/-
४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक)		रु. ५००/-

** नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

➲ सदस्यता ग्रहण करने, पत्रिका भेजने एवं दि. जी. सं. से सम्बन्धित अन्य विषयों के लिए कृपया पत्रिका-विभाग/शाखा-विभाग से सम्पर्क करें। फो.नं. ०१३५-२४४२३४०

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' के माध्यम से सेवा

लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा विनम्र सेवा जारी है। चिकित्सा सुविधाओं से युक्त बीमार बेसहारा लोगों के लिए, घर-द्वार से निष्कासित के लिए, खुले आसमान के नीचे निरा अकेला दिशाहीन, दिग्-भ्रमित और अव्यवस्थित लोगों के लिए एक (होम) घर। सम्भव हो कि हमारे भ्रमण लक्ष्यहीन और निष्फल हों, पर प्रभु का प्यार भरा तीर लक्ष्य साधने को सदा तत्पर रहता है। क्या यह कभी भी सम्भव है कि उस असीम-स्रोत के पावन दृष्टि-पथ और हृदय से वे ओझल हो सकते हैं?

इस ठण्ढी शीत ऋतु का भी हर दिन एक चमत्कार ले कर आता हैह्वह्वप्यार और करुणा का चमत्कार, उनकी उपस्थिति का एक नमूना, उनके हाथों का एक स्पर्श, और ले कर आता है उनके द्वारा हमें नहीं भुलाये जाने का एक वादा। इस प्रकार आसानी से दिन आते हैं और जाते हैं, जीवन जैसा है वैसा ही चल रहा है ऐसा जान पड़ता है। लेकिन अचानक एक साथी पुरुष या स्त्री के सम्पर्क से हम जाग उठते हैं; वह दिन के हर क्षण संघर्षरत है, उसकी उँगलियाँ नहीं हैं, समय पर चिकित्सा न होने के कारण बढ़ती बीमारी ने उसकी आँखों की रोशनी छीन ली है। एक वयोवृद्ध मरीज के सम्बन्ध में (जो इस महीने भरती किया गया है) जो उच्च स्तरीय कुष्ठरोग से पीड़ित है, जिस कारण उसके दोनों हाथ, पाँव और आँखें क्षतिग्रस्त हैं; हालाँकि मरीज का इलाज चल रहा है और सुधार हो रहा है, लेकिन कुछ क्षतियों को वापस ठीक नहीं किया जा सकता। 'होम' के आधे से अधिक अन्तेवासी मरीज वरिष्ठ नागरिक हैंह्वह्वसत्तर से ऊपर की आयु केह्वह्वअक्षमताओं से युक्त एवं अन्य आयु-सम्बन्धित शारीरिक और मानसिक रोगों से ग्रस्त। जीवन जैसा है वैसा ही स्वीकार करना, जिस हाल, जिस परिस्थिति में कोई है उसमें सन्तुष्ट रहना, अपने-आपमें एक वरदान है। बहुधा हम संघर्ष करते हैं, प्रतिरोध करते हैं, कुछ और चाहते हैं, कहीं और रहना चाहते हैं किसी अन्य का साथ चाहते हैं, किसी और समय में, किसी अन्य स्थान में इत्यादि-इत्यादि। अनेकों बीमारों का धैर्य देखना, मौन कष्ट-भोगी का श्रद्धा और विश्वास देखना, जिसका जीवन अब अल्प है, स्वास्थ्य गिर रहा है उसके चेहरे पर मुस्कान देखना, एक कदम पीछे हठ कर स्तब्ध होने को बाध्य करता है। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!

''क्या तुम अभी भी इस क्षण नर-नारि रूप जीवन की फसल नहीं काट रहे हो, वे जो कभी इस धरती पर भ्रमण करते थे? तुम्हारी आवाज क्या है, उन कटी हुई फसलों की ही तो आवाज है? तुम्हारे विचार क्या हैं, उनके ही विचारों का संग्रह तो? तुम्हारे कपड़े, तुम्हारा निवास, तुम्हारा भोजन, तुम्हारे औजार, तुम्हारे कानून, तुम्हारी परम्पराएँ और प्रथाएँ उन्हीं की तो हैं जो कभी थे और पूर्व में ही प्रस्थान कर चुके? हाँ, जब बुढ़ापा आता है मेरे मित्रो, वही तो समय है, उसे सुनो, देखो, उसके हाथ-पाँव को सहारा दो, उसकी गिरती ताकत को प्यार का सहारा दो ताकि वह अनुभव कर सके कि जैसा वह चढ़ते बालपन और युवावस्था में प्यारा था उससे गिरती उम्र में जीवन को जरा भी कम प्यारा है।'' (मीरदाद)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

आश्रम मुख्यालय में महाशिवरात्रि-उत्सव

आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए आध्यात्मिक जीवन जीवन का कोई एक पहलु मात्र ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन ही है। कोई भी आध्यात्मिक जिज्ञासु कभी ऐसा नहीं कर सकता कि दिन में कुछ घण्टे तो आध्यात्मिक गतिविधियों में लगाये और शेष समय अनाध्यात्मिक जीवन जीता रहे। ऐसा करके वह सदा सुखी रहने की आशा नहीं कर सकता। मानव का वास्तविक सार-तत्त्व तो आत्मा ही है, इसको ध्यान में रखते हुए समस्त गतिविधियों का आध्यात्मिक होना आवश्यक है।

इसी उद्देश्य को ले कर हमारे पूर्वजों ने वर्ष-भर में अलग-अलग समय पर मनाये जाने वाले विविध उत्सवों को संचालित किया, जिससे कि यह भली-भाँति लागू हो सके। इसी प्रकार के उत्सवों में एक महाशिवरात्रि-व्रत है जो व्यक्ति को अपनी गतिविधियों को आध्यात्मिकता की ओर लगाने में प्रवृत्त करता है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में २३ फरवरी २००९ को महाशिवरात्रि व्रतोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ समाधि मन्दिर में प्रातः ५ बजे 'जय गणेश' संकीर्तन, गुरु-स्तोत्र, शान्ति-पाठ, पंचाक्षरी-मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का सामूहिक संकीर्तन और सामूहिक ध्यान सत्र से हुआ। इसके साथ ही श्री विश्वनाथ मन्दिर में प्रातःकालीन अभिषेक और श्री विश्वनाथ भगवान् की पूजा सम्पन्न हुई। उधर यज्ञशाला में विश्व-शान्ति के लिए 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्रोच्चारण सहित हवन सम्पन्न किया गया। प्रातः ७ बजे से सायं ७ बजे तक मन्दिर परिसर में 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड कीर्तन चलता रहा।

महाशिवरात्रि व्रत की परिपूर्णता में श्री विश्वनाथ मन्दिर में समस्त रात्रि जागरण, चारों प्रहरों के चार अभिषेक किये गये, जिसमें मन्दिर के गर्भगृह में रुद्रम् और चमकम् का समवेत पाठ चल रहा था और बाहर मन्दिर परिसर में एकत्रित भक्त और सन्त-समुदाय द्वारा पावन 'ॐ नमः शिवाय' और विविध शिव-भजन, स्तोत्र-पाठ, स्तुति-गान इत्यादि हो रहा था।

२४ फरवरी २००९ को प्रातः ४ बजे कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें मंगल-आरती तथा अन्नपूर्णा हाल में पवित्र प्रसाद वितरण हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज का बीकानेर का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भ्रमण

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ ने ६ फरवरी २००९ को बीकानेर (राजस्थान) के लिए श्री गोपी जी और श्री महेन्द्रन जी के साथ प्रस्थान किया। दिव्य जीवन संघ, बीकानेर शाखा द्वारा उनके सत्संग भवन में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वे दिनांक ७ फरवरी के अपराह्न में पहुँचे। कार्यक्रम में भाग लेने और व्यवस्था पर ध्यान देने के लिए श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज, निबन्धक, योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी, ६ फरवरी की सन्ध्या पर बीकानेर पहुँच गये। श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के विशेष अनुरोध पर स्वामी जी महाराज विशेष रूप से जयपुर से श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के भाषण को अँगरेजी से हिन्दी में भाषान्तरित कर सुनने वालों को अवगत कराने आये।

शाखा द्वारा उनके परिसर में विनिर्मित 'गुरु निवास' में यह दल ठहरा, जिसे परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने जा कर और निवास कर पवित्र किया था। परमादरणीय श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के दिनांक ७ से ११ फरवरी तक के प्रवचनों के अतिरिक्त शाखा ने श्रद्धेय श्री स्वामी संवित् सोमगिरी जी महाराज, मानव प्रबोधन ट्रस्ट के प्रधान, श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर, शिव मठ, शिव बारी, बीकानेर और महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री स्वामी विशोकानन्द जी महाराज, धनीनाथ गिरी मठ के प्रधान, पंच मन्दिर,

बीकानेर का प्रवचन भी रखा था। दोनों स्वामी जी ने ९ फरवरी प्रातः तुलसी मन्दिर में भी प्रवचन दिया। सारे कार्यक्रम सुन्दर ढंग से व्यवस्थित किये गये थे और भक्तों की उपस्थिति भी अच्छी थी।

प्रवचनों के अतिरिक्त दिव्य जीवन संघ की शाखा ने निम्नलिखित भ्रमण की व्यवस्था की थी :

१. देशनूक में करणी माता मन्दिर जो बीकानेर से करीब ३० किलोमीटर पर है। २. रास्ते में परमादरणीय श्री स्वामी रामसुखदास जी महाराज का मुरली मनोहर धौरा। ३. बीकानेर का प्रसिद्ध श्री लक्ष्मीनाथ मन्दिर। ४. परमादरणीय संवित् श्री स्वामी सोमगिरी जी महाराज की अध्यक्षता वाले मानव प्रबोधन ट्रस्ट, बीकानेर स्थित श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर। ५. बीकानेर से ४५ किलोमीटर दूर, कोलायत, जो श्री कपिल मुनि का जन्म-स्थान है और जहाँ कपिल मुनि जी ने अपनी माता देवहूति को उपदेश दिया था। ६. बीकानेर के जूनागढ़ किले की सैर। ७. वैष्णव धाम, नान्गरेती माता जी का मन्दिर, साई बाबा मन्दिर, पुरातन हनुमान् मन्दिर, लालगढ़ राजमहल और धनीनाथ गिरी मठ।

अपने दल के साथ स्वामी जी महाराज कुछ भक्तों के भावपूर्ण अनुरोध कि उनके घर भिक्षा की जाये और उन्हें आशीर्वाद दिया जाये, उनके घरों में गये। स्वामी जी ने उन्हें उपदेश भी दिया।

पूरे कार्यक्रम और भ्रमण की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी और भक्तों ने एकजुट हो कर सेवा की। सुश्री पुष्पा माता जी, वन्दना माता जी, नीलमणि जी, शिमला नरुला, श्रीमती सुमन मूलचन्दानी, श्रीमती मीरा गुप्ता, श्री सुभाष सक्सेना जी, श्री दामोदर शर्मा जी, श्री किशोर कथूरिया एवं अन्य द्वारा की गयी भावपूर्ण सेवाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

जनवरी-फरवरी २००९ में परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय) सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

२१ जनवरी को स्वामी जी महाराज पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित वार्षिक साधना शिविर में भाग लेने के लिए हामिरागाछी (पश्चिम बंगाल) पहुँचे। उसी दिन सायंकाल में स्वामी जी महाराज ने साधना शिविर का उद्घाटन किया तथा उपस्थित साधकों को सम्बोधित किया। शिविर २५ जनवरी तक था। स्वामी जी महाराज ने प्रातःकालीन, पूर्वाह्न और अपराह्न सत्रों में भाग लेते हुए साधना के विविध पहलुओं पर प्रवचन दिये। रात्रिकालीन सत्संग में भी स्वामी जी सभी दिनों में उपस्थित रहे और समापन प्रार्थनाएँ भी कीं। स्वामी जी के अतिरिक्त श्री स्वामी सेवानन्द जी, श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी, श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी, श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी, श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी, श्री स्वामी आनन्दस्वरूपानन्द जी तथा कुछ अन्य भी थे। पश्चिम बंगाल, सिक्किम, उड़ीसा, बिहार तथा कुछ अन्य प्रान्तों से भी भक्त जन इसमें सम्मिलित होने के लिए आये हुए थे। शिविर अत्यन्त उत्तम ढंग से संचालित किया गया था। इसका संचालन दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल ने डा. पी. के. सामन्तराय, जनरल सैक्रेटरी के नेतृत्व में तथा श्री चंद्रभूषण सहगल, श्री नितुल पारेख, श्री बिजॉय स्वाँई, श्री दीपक दासगुप्ता, श्री दीपक विश्वास तथा अन्य सहयोगियों की सहायता से अत्यन्त उत्साहपूर्वक, समरसता से तथा एकत्व की भावना से किया था। यह शिविर अत्यन्त सफल रहा, सभी के लिए अत्यन्त लाभप्रद रहा और अत्यन्त सन्तोषजनक भी रहा।

दिव्य जीवन संघ खिद्देरपोर शाखा ने रेल कर्मचारियों और पदाधिकारियों के लिए गार्डन रीच के रेलवे ऑफिसर क्लब में २७ जनवरी को एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया था। स्वामी जी महाराज ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और 'दिव्य जीवन तथा जीवन में सुखी रहने के ढंग' पर प्रवचन दिया जिसमें पर्याप्त संख्या में लोगों ने भाग लिया तथा सभी भाग लेने वालों ने इसकी अत्यधिक सराहना की।

शिवानन्द आश्रम के एक महान् समर्पित भक्त तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के शिष्य, श्री स्वामी

रामानन्द जी के आमन्त्रण पर स्वामी जी महाराज उत्तर प्रदेश के मेरठ के निकट खिवई स्थान पर शिवानन्द सरस्वती कन्या इण्टर कॉलेज में गये। स्वामी जी के साथ श्री एस. आर. शर्मा जी, आई. ए. एस. सी. (रिटायर्ड) तथा अन्य कुछ लोग और भी थे। श्री स्वामी रामानन्द की यह गहन इच्छा थी कि गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पावन नाम समस्त जिले में सुविख्यात हो जाना चाहिए। अपनी इस दृढ़ इच्छा के फलस्वरूप ही वह अपने गाँव में गुरुदेव के नाम से लड़कियों के लिए कन्या इण्टर कॉलेज आरम्भ कर पाये। वहाँ पूरे क्षेत्र में अभी तक लड़कियों के लिए कोई विद्यालय था भी नहीं। ग्रामवासियों तथा अन्य भद्र पुरुषों की सहायता से विद्यालय के लिए भवन भी बनने लगा है। स्वामी जी महाराज के वहाँ पधारने के सुअवसर पर कॉलेज में एक सत्संग आयोजित किया गया था, जिसमें कॉलेज की छात्राओं, प्राध्यापकों, प्रिंसिपल तथा अन्य लोगों ने भाग लिया। स्वामी जी महाराज ने छात्राओं को प्रवचन दिया जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की और सब अत्यन्त प्रसन्न हुए। श्री स्वामी रामानन्द जी का यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है और इसे सब ओर से प्रोत्साहन व सहायता मिलनी चाहिए। कुछ लोगों ने कॉलेज की वित्तीय सहायता करने का विश्वास भी दिलाया, जिसने सभी को आनन्द प्रदान किया।

३१ जनवरी को, स्वामी जी महाराज 'स्वामी शिवानन्द मैमोरियल इन्सटीट्यूट, दिल्ली' जिसके कि स्वामी जी चेयरमैन हैं, की मीटिंग में सम्मिलित हुए।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अहमदाबाद (गुजरात): ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के महासमाधि महोत्सव के अन्तर्गत शाखा ने गान्धी नगर (गुजरात) के निकट उवासद में १२ सितम्बर २००८ को ३०० विकलांग बच्चों तथा शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए विशेष अन्नदान की व्यवस्था की। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने 'केरल समाज वस्ना' में 'धार्मिक जीवन कैसे जियें' विषय पर आध्यात्मिक व्याख्यान दिया। १३ नवम्बर २००८ को निकटस्थ ग्राम भादज में आयोजित सत्संग में परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज, श्री स्वामी भक्तिभावानन्द जी व ब्रह्मचारी आत्मनिष्ठ चैतन्य जी सम्मिलित हुए, जहाँ एक हजार गाँववासी परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की आध्यात्मिक वार्ता एवं भजन व कीर्तन से लाभान्वित हुए। यह इनके लिए ऐसे दिव्य जीवन सत्संग का पहला अवसर था।

बरबिल् (उड़ीसा): साप्ताहिक सत्संग व सचल सत्संग का आयोजन किया गया। शिवानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी में ४०० मरीजों की नवम्बर मास में सेवा की गयी।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा एवं प्रत्येक रविवार को अष्टोत्तर नामावलि के साथ साप्ताहिक गुरु पादुका पूजा का आयोजन किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के महासमाधि दिवस २३ नवम्बर को विशेष पूजा व सत्संग किया गया। सभी आध्यात्मिक अनुष्ठानों में महामृत्युंजय जप, विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थना व शान्ति-पाठ किया गया, आरती के पश्चात् प्रसाद वितरित किया गया।

छत्रपुर (उड़ीसा): नवम्बर में चार साप्ताहिक सत्संग तथा छह विशेष सत्संग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ८ नवम्बर को गुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा २४ नवम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की विशेष गुरु पादुका पूजा एवं अर्चना की गयी। शाखा के वार्षिक समारोह के अवसर पर पवित्र कार्तिक मास में दैनिक श्री रामचरित मानस पाठ १४ अक्टूबर से १३ नवम्बर तक आयोजित किया गया। समापन समारोह में परम पूज्य श्री स्वामी रामकृपानन्द जी ने भक्तों के विशाल समूह को आशीर्वचन प्रदान किये। वृश्चिक संक्रान्ति के अवसर पर १६ नवम्बर को सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया।

गान्धी नगर (गुजरात): सप्ताह में तीन बार सायंकाल नियमित सत्संग व स्वाध्याय किया गया। पुरुषों के लिए दैनिक योगासन प्रातःकाल तथा महिलाओं के लिए सायंकाल प्रतिदिन योग कक्षाओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक मास में १ से १० तारीख तक योग प्रशिक्षण कक्षाओं का सफल आयोजन किया गया है। डा. एन. जे. मेघानी महीने में दो बार होम्यो मेडिकल सेवाएँ देते हैं। ८ तारीख को

नारायण सेवा तथा २४ तारीख को बाल दरिद्र सेवा आँगनवाड़ी में की जाती है। कुष्ठ रोगियों तथा गरीब रोगियों को आर्थिक सहायता दी जाती है। विशेष गतिविधियाँह्वह्व२२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक सात दिन का योगासन शिविर आयोजित किया गया। विभिन्न आयु वर्ग के ४० प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। यह शिविर श्री अश्विनी भाई दवे के द्वारा संचालित किया गया। ग्राम स्तर पर विकास कार्यक्रमों के लिए ऐसे शिविर प्रारम्भ किये गये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): श्री विश्वनाथ मन्दिर तथा ब्रह्मलीन श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी महाराज के समाधि मन्दिर में नियमित पूजा की गयी। ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना, ध्यान, योगासन, रात्रि सत्संग लगातार चल रहे हैं। सोमवार को शिव चालीसा पाठ, शुक्रवार को दुर्गा चालीसा पाठ, शनिवार को हनुमान चालीसा पाठ तथा बृहस्पतिवार को गुरु पादुका पूजा सम्पन्न की गयी। विशेष कार्यक्रमह्वह्व(१) ८ दिसम्बर गीता जयन्ती पर श्रीमद् भगवद् गीता पाठ, श्री विष्णु सहस्रनाम, विशेष पूजा-अर्चना की गयी। (२) ३० दिसम्बर २००८ से १ जनवरी २००९ ब्रह्मलीन श्री स्वामी सदाप्रेमानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि समारोह मनाया गया। २ जनवरी २००९ को विशेष भण्डारा किया गया।

जगदलपुर (छत्तीसगढ़) : नियमित कार्यक्रमह्वह्वब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना, ध्यान, श्री राम चरित मानस पाठ, श्री हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक, शिव चालीसा, योगासन कक्षाएँ, 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जप, सायंकालीन सत्संग का आयोजन किया गया। बृहस्पतिवार को गुरु पादुका पूजा तथा शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया। विशेष कार्यक्रमह्वह्वभगवद् गीता पाठ, श्री विष्णु सहस्रनाम, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जप एक घण्टे तक गीता जयन्ती महोत्सव पर किये गये।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँह्वह्व (१) पण्डित राधामोहन जी द्वारा प्रतिदिन प्रातः श्रीमद् देवी भागवत से दैनिक प्रवचन। (२) सोमवार से शुक्रवार तक प्रतिदिन सायंकालीन सत्संग। (३) प्रत्येक शनिवार को सुन्दरकाण्ड पाठ। (४) रविवासरीय सत्संग, सिद्धेश्वर मन्दिर में प्रत्येक सोमवार को मातृ सत्संग। (५) सर्वजनकल्याणार्थ प्रत्येक बृहस्पतिवार को महामृत्युंजय जप। (६) स्वास्थ्य सेवाएँह्वह्वस्वामी शिवानन्द होम्योपैथिक धर्मार्थ चिकित्सालय में १३५४ रोगियों की सेवा की गयी। सप्ताह में छह दिन दो डाक्टर सेवा करते हैं। (७) दैनिक योग कक्षाएँ प्रातःकाल एक घण्टे तक। (८) स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिक पुस्तकालय गुरुदेव तथा अन्य प्रकाशनों के प्रेरणादायक आध्यात्मिक साहित्य से जिज्ञासु तथा मुमुक्षुओं को सुविधा उपलब्ध। (९) सिद्धेश्वर मन्दिर में प्रतिदिन नारायण सेवा। अन्नक्षेत्र, लगभग ३०० लोगों के लिए। शाखा गरीबदास कुष्ठ आश्रम में कुष्ठरोगियों को राशन उपलब्ध करा रही है। २५ से अधिक विधवाओं को आर्थिक सहायता। शिवानन्द छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत कक्षा ६ से १० वीं तक के ८० छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। (१०) आम जनता के लिए पेयजल सुविधा हेतु वाटर कूलर लगाया गया। विशेष कार्यक्रमह्वह्व(१) १३ नवम्बर को कार्तिक मासान्त में सत्यनारायण कथा तथा विशेष पूजा की गयी। (२) ३५ भक्तों के लिए दो दिवसीय वृन्दावन वृज क्षेत्र का आध्यात्मिक भ्रमण आयोजित किया गया।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): विशेष कार्यक्रमह्वह्व (१) श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने योग में विशेष वार्ता दी तथा पण्डित ब्रजेश पाठक रामायणी जी ने १९ अक्तूबर को रामायण में विशेष कार्यक्रम में प्रवचन दिये, जिसमें ३०० लोग उपस्थित थे। (२) परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ हेडक्वार्टर्स, परमादरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज, परमादरणीय श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज तथा आश्रम के अन्य सन्त-महात्माओं ने प्रवचन किये। उनके दर्शन से भक्तों को आध्यात्मिक प्रेरणा मिली। इतने बड़े जन-समूह को देख कर सभी स्वामी अति प्रसन्न हुए तथा शाखा की उन्नति पर उन्होंने प्रशंसा की। (३) २९ अक्तूबर को अन्नकूट महोत्सव मनाया गया, जिसमें ५०० से अधिक लोगों ने भाग लिया। (४) आम जनता के लिए नियमित होम्योपैथिक मेडिकल सेवा उपलब्ध की गयी है।

जयपुर (उड़ीसा): रविवार को साप्ताहिक पूजा तथा गुरुवार को सचल सत्संग का नियमित आयोजन किया गया है। विशेष कार्यक्रमह्वह्व २ नवम्बर को गीता यज्ञ किया गया। प्रत्येक श्लोक के लिए आहुति दी गयी। ८ नवम्बर शिवानन्द दिवस के रूप में मनाया गया, विशेष पूजा व हवन किया गया।

कोत्तवलसा (आन्ध्र प्रदेश): सोमवार को साप्ताहिक सत्संग किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी अक्षयानन्द जी महाराज की पुण्य-स्मृति में १२ दिसम्बर को विशेष सत्संग का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता लइदाम के श्री रामयोगी जी ने की और श्रीनु सिद्धान्ती जी ने भाषण दिया। लगभग २०० भक्तों ने इसमें भाग लिया। विशेष पूजा तथा प्रसाद वितरण किया गया।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त भक्तों के निवास में विशेष सचल सत्संग का आयोजन किया गया। प्रत्येक मास ८ व २४ तारीख को विशेष सत्संग किया गया और नवरात्रि सत्संग अक्तूबर में सम्पादित किये गये।

फूलबानी (उड़ीसा): दैनिक पूजा तथा रविवार साप्ताहिक सत्संग किया गया। विशेष कार्यक्रमह्रह्र६ नवम्बर को ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को पादुका पूजा की गयी। ८, ९, २४ व २८ दिसम्बर को भी पादुका पूजा की गयी। ६ से १२ नवम्बर तक भागवत सप्ताह आयोजित किया गया। गीता जयन्ती उत्सव में हवन व अन्नदानम् किया गया।

वडोदरा (गुजरात): प्रत्येक मास की ८ वीं व २४ वीं तिथि को पादुका पूजा की गयी। सप्ताह में ६ दिन होम्योपैथी व आयुर्वेदिक सेवाएँ उपलब्ध करायी गयीं। अक्तूबर में विशेष नवरात्रि कार्यक्रम किये गये और ईशावास्य उपनिषद् में परिचर्चा व संगोष्ठी की गयी। नवम्बर में आध्यात्मिक वार्ताएँ एवं ध्यान सत्रों का आयोजन किया गया।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): ७ दिसम्बर को भक्तों के आवास में सचल सत्संग का आयोजन किया गया। १४ व २८ दिसम्बर को वृद्धाश्रम में विशेष सत्संग का आयोजन किया गया।

विदेशी शाखा

मारीशस : पूज्य श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी महाराज के ८७ वें जन्म जयन्ती महोत्सव पर २७ से २९ दिसम्बर तक तीन दिवसीय विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष वेंकटेश पूजा, गुरु पादुका पूजा, प्रवचन-व्याख्यान, चर्चाएँ, महामन्त्र जप, बच्चों का सत्संग, नारायण अन्नसेवा और रक्तदान का आयोजन किया गया।

□ □ □

पावन-स्मृति में

पैट्रिसिया मेरी गिब्बन्स

अमेरिका से ऐसा समाचार प्राप्त हुआ है कि हमारे आश्रम की लम्बे समय से भक्त, सेनेक्टाडी, न्यू यार्क की श्रीमती पैट गिब्बन्स का देहावसान दिनांक २० जनवरी २००९ को ८५ वर्ष की स्वर्णिम आयु में, लम्बी बीमारी के बाद शान्तिपूर्वक हो गया। गरीब बच्चों की भलाई के लिए निष्ठापूर्वक चिन्तित पैट समाज-सेवा के क्षेत्र की ओर आकृष्ट हुई और न्यू यार्क राज्य में समाज-सेविका के रूप में आजीवन कार्यरत रही।

जब हम लोग पहली बार पैट से मिले थे, उस वक्त उसकी आयु ५० वर्ष के लगभग होगी। स्थानीय कालेज में ध्यान और वेदान्त पर प्रवचन सुन कर स्वामी गुरुदेवानन्द (सीता फ्रेंकेल) माता जी द्वारा हैरीमन, न्यू यार्क की दिव्य जीवन संघ की शाखा में आयोजित मासिक योग साधना शिविर में सम्मिलित होने लगी। वह प्रथम बार, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से १९७४ में, जब वे हैरीमन आश्रम गये थे, मिली थी। जब वह पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तस्वीर को निहार रही थी, तो वह तस्वीर चमत्कारिक रूप से स्वामी चिदानन्द जी से एक-रूप हो रही थी। उस वक्त से वह जान गयी थी कि उनका गुरु कौन होगा।

आगामी ३६ वर्षों तक पैट दिव्य जीवन संघ मेरीलैण्ड के प्रति समर्पित रही। वह स्वामी गुरुदेवानन्द जी से बहुत करीब हो गयी और उनके साथ उसने कई अवसरों पर भारत की यात्रा की। जहाँ भी कभी श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज आमन्त्रित होते वैसे अनेकों यूरोपीय साधना शिविरों और प्रत्येक अमेरिकी साधना शिविरों में भाग लिया। इन दोनों गुरुओं के प्रति उसका प्यार उसकी नैष्ठिक उपस्थिति, उसकी सेवा, उसका ज्ञान, उसकी उदारता और उसकी कृतज्ञता से जाना जा सकता है। अनेकों अवसरों पर मैरीलैण्ड का दिव्य जीवन संघ वित्तीय संघर्षों से नहीं बच सकता था यदि वहाँ पैट की उदारता आगे न आती।

कुछ शारीरिक समस्याओं के होने पर भी पैट ने कभी शिकायत न की। वह साहसपूर्वक कष्टकर हालातों से चुपचाप जूझती रही। वह बहुत ही ईमानदार व्यक्ति थी। अस्तित्व की सत्यता और सच्ची स्वतन्त्रता के अनुभवों को जानने की शुभ इच्छा उसमें थी। समग्र सृष्टि की एकरूपता का अनुभव करना जीवन का ध्येय है, ऐसा वह जानती थी। जिस हाल में वह थी, उसने उसे स्वीकार किया और दृढ़ सतर्कता से, ध्यान द्वारा अपनी जाग्रत चेतना को ऊँचा उठाया। अब पैट को अपने स्रोत में वापस बुला लिया गया है, वापस उसी प्रकाश में जहाँ से वह आयी थी। अब वह आयु के परिसीमन एवं कष्टपूर्ण शरीर से मुक्त हो चुकी है। सचमुच अनेकों उसके अभाव का अनुभव करेंगे।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण को तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मीकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम

२. लिंग और आयु

३. राष्ट्रीयता

४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता

५. ई-मेल का पता

६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर

७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*

८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध

९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका

---

* स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?

११. आगमन का उद्देश्य

१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)

१३. आगमन की तिथि-तारीख

१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायह्नह्नपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों को अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य-समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी